पत्र सूचना शाखा
सूचना एवं जनसम्पर्क विभाग, उ0प्र0

राज्यपाल को कैलेण्डर की प्रथम प्रति भेंट की

लखनऊः 4 जनवरी, 2017

उत्तर प्रदेश के राज्यपाल श्री राम नाईक को आज राजभवन में दीनदयाल उपाध्याय जन्म शताब्दी वर्ष के उपलक्ष्य में नूतन आफसेट मुद्रण केन्द्र द्वारा प्रकाशित कैलेण्डर की प्रथम प्रति भेंट की गई। इस अवसर पर श्री रामजी भाई, श्री संजय, श्री पी0के0 शुक्ला, श्री भास्कर दुबे, श्री बृजेश, श्री सर्वेश सहित नूतन आफसेट मुद्रण केन्द्र के पदाधिकारी उपस्थित थे। 1 जनवरी, 2017 से 31 मार्च, 2018 तक की अवधि वाले कैलेण्डर में भारतीय एवं अंग्रेजी दोनों तिथियों का साथ-साथ उल्लेख है। कैलेण्डर में शुभ मुहर्त, भारतीय पर्व, व्रत के साथ-साथ पंडित दीनदयाल उपाध्याय के प्रेरक कथनों को उद्धृत किया गया है।

राज्यपाल ने कैलेण्डर की सराहना करते हुये कहा कि पं0 दीनदयाल द्वारा पंक्ति में अंतिम पायदान पर खडे व्यक्ति के विकास के प्रति व्यक्त किये गये विचार आज भी प्रासंगिक हैं। पं0 दीनदयाल पर आधारित कैलेण्डर उनके विचारों को आम जनता तक पहुँचाने में सहायक सिद्ध होगा। कैलेण्डर में दी गयी जानकारी जनमानस की लिये लाभकारी होगी। सामान्यतः सभी कैलेण्डर 12 माह के होते हैं लेकिन नूतन आफसेट मुद्रण केन्द्र द्वारा 15 माह का कैलेण्डर चैत्र नववर्ष के हिसाब से प्रकाशित किया गया है।

श्री नाईक ने कहा कि यह सौभाग्य की बात है कि पं0 दीनदयाल जन्म शताब्दी वर्ष के उपलक्ष्य में उनके जीवन पर आधारित 15 खण्डों में वर्णित दीनदयाल उपाध्याय सम्पूर्ण वाङ्मय का प्रकाशन हुआ और उन्हें 13वें खण्ड में भूमिका लिखने का अवसर प्राप्त हुआ। लखनऊ में आयोजित एक कार्यक्रम में पं0 दीनदयाल उपाध्याय को आदरांजलि स्वरूप एक डाक टिकट भी जारी किया गया है। उन्होंने कहा कि पं0 दीनदयाल जन्म शताब्दी वर्ष से जुडे तीसरे कार्यक्रम में सम्मिलित होने का अवसर मिला है।

राज्यपाल ने कहा कि गौरवशाली भारतीय परम्परा के प्रतीक एवं राष्ट्रवादी भावना जगाने वाली 20वीं सदी के महान मनीषियों में पं0 दीनदयाल का नाम बडे सम्मान के साथ लिया जाता है। वे बहुमुखी प्रतिभा के धनी और एकात्म मानववाद के प्रणेता थे, जिन्होंने अपना सारा जीवन राष्ट्रहित के लिये समर्पित कर दिया था। पं0 दीनदयाल एक सामान्य व्यक्ति, कुशल संगठक और मौलिक विचारक होने के साथ-साथ समाजशास्त्री, अर्थशास्त्री, राजनीति विज्ञानी एवं दार्शनिक भी थे।

अंजुम/ललित/राजभवन (3/3)